हिन्दी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक :

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

ISBN : 978-81-953548-9-4

© : संपादक

प्रकाशक : मनीष पब्लिकेशन्स
471/10, ए-ब्लॉक, पार्ट-द्वितीय,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
मो. नं. 09968762953
email : manishpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 800/-

शब्द संयोजक : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

आवरण : अमित

मुद्रक : पूजा ऑफसेट, जगतपुरी, दिल्ली-110093

Hindi Sahitya Mein Vividh Vimarsh
Edited by Dr. Surendra Sharma

अनुक्रम

	दो शब्द	7
1.	हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	15
2.	किसान विमर्श और हिंदी कथा साहित्य **डॉ. ओम प्रकाश सैनी**	24
3.	हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक विमर्श **डॉ. मनोरमा शर्मा**	34
4.	हिन्दी कहानियों में वृद्ध-विमर्श **डॉ. यशोदा मेहरा**	43
5.	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	48
6.	हिन्दी उपन्यासों में किसान-विमर्श का आर्थिक और सामाजिक चित्रण **डॉ. हरप्रीत कौर**	61
7.	समकालीन हिन्दी कविता और आदिवासी जीवन **डॉ. प्रिया ए.**	67
8.	ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में दलित-चेतना **डॉ. हिमेन्द्र पाल काशव**	75
9.	मुक्तिबोध की इतिहास-दृष्टि और साहित्य-समीक्षा **डॉ. कमलेश यादव**	80
10.	वृद्ध जीवन : विमर्श के आईने में **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	89

किसान विमर्श और हिंदी कथा साहित्य

डॉ. ओम प्रकाश सैनी
डी. लिट्
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल(हरियाणा)

खेती मनुष्य का सबसे प्राचीन पेशा है। आदि काल से लेकर अब तक मनुष्य के इस व्यवसाय से जुड़े होने के असंख्य प्रमाण मिलते हैं। वैदिक वांग्मय में यज्ञ आदि पवित्र कर्म का उल्लेख होना इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य और देवता सभी का जीवन यज्ञ पर आश्रित है। यदि हम यज्ञ की संपूर्ण प्रक्रिया को देखें तो पाएंगे कि इसका संबंध कृषि कर्म या उत्पादन से जुड़ा है। ब्रीहि (धान) यव (जों) माण (उड़द) मुदंग (मूंग) गौधूम (गेहूं) और मसूर आदि अनाज यज्ञ क्रिया का मुख्य घटक रहे हैं, जिनका वर्णन आयुर्वेद में मिलता है। वैदिक ऋषियों ने कृषि कार्य को सर्वश्रेष्ठ माना है। वैदिक व्याख्याकारों का मानना है कि राजा जनक कृषि के अधिष्ठाता है और सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी है। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में कृषि का गौरवपूर्ण उल्लेख मिलता है। 'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः' अर्थात जुआ मत खेलो, कृषि करो और सम्मान के साथ धन पाओ। हमारे समाज में प्रचलित जन उक्ति कृषि कार्य की श्रेष्ठता को सिद्ध करती है 'उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी कुकर निदान' खेती को उत्तम माना गया है क्योंकि इस क्रिया के प्रारंभ होने से लेकर उत्पादित होने तक करोड़ों जीवधारियों, पशु-पक्षियों का पेट भरता है। प्राचीन काल में राजा और प्रजा गुरुकुल में खेती के साथ-साथ ज्ञानार्जन करते थे अर्थात ज्ञान और श्रम के बीच कोई दूरी नहीं थी। भारतीय साहित्य विशेषकर हिंदी साहित्य में कालांतर से किसान और उसके जीवन को केंद्र में रखकर किसानी जीवन की अनेक समस्याओं को उकेरा गया है। किसान जीवन की 'मरजाद' है खेती और उस जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ भी है। आधुनिक हिंदी साहित्य में कृषक संस्कृति के विभिन्न पक्षों को बखूबी देखा जा सकता है। 'कामायनी' में कृषक संस्कृति का व्यापक वर्णन मिलता है। निराला का कृषक जीवन से गहरा संबंध है। किसान के लिए वर्षा का कितना महत्त्व है उसे 'बादल राग' जैसी कविताओं में देखा जा सकता है। प्रेमचंद ने कृषक संस्कृति को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया।